उफळती ओफळ

स्यू गळता

पगा नैं

सादर समरपण...

—श्याम महर्षि

उकळती ओकळ

स्पू वळता

पगा नै

सादर समरपण...

—श्याम महर्षि

म्हारी ओळखा

कवितावां, म्हारी जिंदगाणी, जकीनैं मैं भांत-भांत री बानगी मांय खारोमीठो सुवाद लैयनै भोगतो रैयो हूं, री पडछिया है।

मैं आ नी कय सकूं क म्हारी कवितावां आम पाठक रै कविता प्रति शत नै आगरै सागै लैय र चालै है पण आ बात सजोरा कैय सकूं कै कविता जठै ताईं कुटम्बअर समाज रै घणकर हिस्सै री साची फोटू आम पाठक रै सामी नी राख सकै, बठै ताईं हूं उणनैं कवितानी सीकार सकूं।

रचनाकार जठै ताणी रचना रै मांय यथार्थवादिता रा थोडा भोतई गुण नी राखसी बठै रचना रो कोई नै कोई उजळो अंग पकायत दब'र रैय ज्यासी।

मैं जठै म्हारी कल्पना करडी मायली पीड बानी स्यूं सावचेत हुय'र उणनै कविता में बांधण रै खातर रिज्यो हूं बठै मानखै रै मोलकानी स्यूं भी सावचेत हूं। रचनावां खातर मैं आ कैय सकूं क कविता म्हारै

विगत

म्हारी ओळखां

कवितावा, म्हारी जिन्दगाणी, जकीनैं मैं भात-भांत री बानगी मांय खारोमीठो सुवाद लयनै भोगती रैयो हू, री पडछिया हैं।

मैं आ नी कैय सकू कै म्हारी कवितावा आम पाठक रै किता प्रति शत नैं आपरै सागै लय'र चालै है पण आ बात सजोरा कैय सकू कै कविता जठै ताई कुटम्बअर समाज रै घणा करै हिस्सै री साची फोटू आम पाठक रै सामी नी राख सकै, बठै ताई हू उणनै कवितानी सीकार सकू।

रचनाकार जठै ताणी रचना रै माय यथार्थवादिता रा थोडा भोतई गुण नीं राखसी बठै रचना रो कोई नै कोई उजळो अग पकायत दब'र रैय ज्यासी।

मैं जठै म्हारी कल्पना करैडो मायली पीड कानी स्यू सावचेत हुय'र उणनै कविता मे बाधण रै खातर रिज्या हू बठै मानखै रै मोलकानी स्यू भी सावचत हू। रचनावा खातर मैं आ कैय सकू क कविता म्हारै

म-तस स्यू नीसरैंडी एक ग्रमूज है। हो सर्वे म्हारी कवितावां परम्परागत चि-तण स्यू अळगी हुय'र सीधो सपाट भावुक हिड्दै री ग्रोळगाण करावै।

घणकरी कवितावा रो सम्बन्ध भी आज रै मिनख ग्रर बीरै संघष स्यू है। पण मिनख स्यू भी एक क्लिास नीच री श्रैणी माय रवणै ग्राळा, कै दो किलो दाणा उधार मागणै ग्राळै मिनख स्यू कितीक नैडी है आ तो ग्राप ई जाण सकोला।

जका जुल्म सैय रैया है, बान कष्ट मांय जीण रा ससकारा स्यू जद ई मुक्ति मिलसी जदक उण माय संघष करणै री भावना उगसी। बिया केग्री लोगां खातर संघष ग्रापरी ग्रापनै दियोडी यातनावा होवै। पण जुल्म सैवणिया जद ग्रपणै ग्रापनै मिनख हुवण री जाच करै जद बानै संघष स्यू ताक्त ग्रर समझ दोनू मिलै।

संघष माय जै भविष्य रै सुख री कल्पना नी होव तो संघष करण ग्राळा भी ग्रापरी जीतन जीयां पछ भी पीडित समझणै लाग जाव। कैंवण रो ग्ररथाव ग्रो ई है क मिनख मन ग्रर भावना स्यू लगोलग तूटतो जाय रैयो है।

ग्राज रो मिनख ग्रापणै ग्रापनै ग्रात्मबोधी घणो समझ वो ग्रापरी तरक्की कानी स्यू घणो उतावळो ग्रर ढैढ फढ हुयोडो सो लागै। मिनख ग्रथ (धन) री मासळ हाऽचा कानी गडकडै दाई भाज रैयो है। इसा थोडा मिनख है जका ईमानदारी स्यू गुण ग्रवगुण री परख राखता होवै।

कई जणा कविता नै खाली भावुकता बता र विज्ञान रो पख लग्न पण केग्री विनान नै नीरस ग्रर कळा रो गळो घोटण ग्राळी बताव।

१९६६ ६७ स्यू हिन्दी राजस्थानी भाषा माय लिखणै री बाण पडी, लिखण साथ ग्रेक लगण पडी, जकी ग्राज लग बकरार है। उण बखत स्यू लैय'र ग्राज ताणी राज्य री घणकरीक पत्र पत्रिकावा ग्रर सक-

लनो माय छपतो रैयो। १९७३ स्यू आकाशवाणी माय भी दाय चार दफ रचनावां प्रसारण रो मौको मिल्यो। म्हारै मन माय लखायो क रचनावा, छपणै रो गैला खुद ब खुद रचनावा आपरी रवती स्यू करै। दिन ब दिन कवितावां साख लैवणै री स्वाभाविक प्रक्रिया दाई लिखीजणी शुरु हुयगी।

जठ बैसाख री उकळती ओवळ स्यू ओजू ई भणिजण जावतै टाबर अर खत वगतै मिनख रा पग बळै, ठा'नी कदताई आ लोगां रा पगल्या इया ई बळता रैसी। क तो आ ओवळ आपरो सुभाव छोड देसी कै लोगां रा पगल्या इता सबळ हुय जासी क बारा पग बळ नी सकै।

आजादी रा ३० बरस बीतग्या पण ओजू ई, मुलक रो धार्णदार बिया ई थाण माय बडते भले मिनख रो ठोकर अर मादर. री गाळ स्यू सुवागत करै।

ओजू ई गाव रो ग्रेज्युग्रेट जुवान कचडी अर दपतरा रै अफसर स्यू बात करतो सक। ओजू ई समाज री एक वडी जमात ऊ'ची पढाई बिना जुगाट अणभणिया रैय रैया है।

आज रो गाव ४०-५० बरस पल्या र गाव स्यू घणा अळगो अर फरक दरसावतो नी लागै।

गाव रो जुवान भलाई ५ स्यू १० क्लास ताणी भणीजलै पण भौतिक लडाई री दौड माय वो आज ई आपर अणभणिया बैन भाया स्यू घणो लारै समझै। उणरा मा बाप उणरी बेकारी अर खत माय काम करण री निवळी खिमता दै'खर दूजा टावरा नै सरावै अर भणीजणिया टावर नै पढा र खोटी करणैं र माथै पिसतावो कर।

उपरला चित्रम आ दीठावै क मैं म्हारो अस्तित्व म्हारी रचनावा इण चित्रामा स्यू अळगी किया राख सकै।

आजादी रै चार बरसां पैल्यां राजस्थान रै आथूणी हिस्सै मैं बस्योड़ै रतनगढ़ माय मध्यम वर्गीय परिवार माय मोवी बेटो मुवावणरो सुभाग मिल्यो। स्याणो हुवण रै बैम स्यू लय'र सत्रा बरसां ताई रतनगढ कळकतो सिरदारशहर अर बम्बई मांय रैयन पढाई रै नांव माथै भणतो भटकाव।

(तमै पाच बरसई मेट्रिक पास नई करीसको) गुजराती मास्टर र कैंवता थका भी दसवीं पास करी। म्हारा आदरणीय गुरु श्री एस पी सिंह री सत प्रेरणा स्यू मैं मायता री मनस्या नी हुँवता थका भी एकलव्य परम्परा माय पढणै री हूक मन माय लिया पैतृक धन्धै मे रुचि राखणै र खातर आयुर्वेद माय विशारद पासकरी। कॉलिज अर विश्वविद्यालया रै बारै बारै फिरता थका भी ऊंची शिक्षा रो सुपनो पूरो करयो। पढाई री भूख गळदाई मांय बदळ रैयी है। एम ए री दो-दो डिगरयां रो बोझ बैमन स्यू लादया फिरु हू, ठा नी आ डिगरयां स्यू म्हारो अपमाण हुयो है कै डिगरयां रो म्हारै स्यू।

कविता क्यू अर किया लिखणी शुरु करी आ खरी खरी तो नीं यादपण आ कैय सकू कै पढाई अर बेकारी र दिनां विचाळै आक्रोश-कुण्ठा री तपण सू काचरी ज्यू तूटतो रैयो अर मन मे कवितावा रा उदगार बतू-ळियै री दाई उठता रैवता अर ओळया बणनै उतर आवता कागद माथ।

म्हारी कवितावा आप प्रबुद्ध पाठका नै किसीक दाय आयसी आ तो थे ई जाणो।

—श्याम महर्षि

बसत पचमी
सम्वत् २०३४

आन्तरो

मैं हिन्दू हूं मुसळमान हूं
किरिस्तान हूं।
म्हारा न्यारा-न्यारा
भगवान है।
जिका न्यारी न्यारी जिगा
मिंदर, मैजत, अग्निघगर
अर गिरजाघर माय
बिराजै।
सगळा रै भगवान रै
दो कान, दो हात, दो पग
अर अेक नाक हुवै
सगळा रै भगवान रो
उणियारो
मिनखा स्यूं
रळतो-मिळतो हुवै
पण' फेरु ई

इणनै पुजणिया आपा
आपसरी माय
इया लडा
जिया को ई
न्यारी-न्यारी जात रा
जीव–जिनावर होवा।
अेक रुप मे
घडीजेडिया इण
भगवान रा भगत
आप-आप रै भगवान नै
बडो बतावै
खून-खराबो करै
लडै मरै,
काई करै बापडो
अकेलो भगवान
आभै बैठ्यो
सुबकिजै
आसू बुहावै
अर पिस्ताओ करै
इण बातरो
क'जैमैंमिनखा नै
घडती वैळा
सिस्टी रै बीजा
जीवा दाई
इण माय

कदास अक्कल नी घालतो
तो आज अे
म्हारा न्यारा-न्यारा भगत
आपसरो मे म्हारै
उपरा नी लडता ।
भगवान दुखी होय
मन मार्योडो सो
उसास पड्यो
"अबै हू धरती रै ठिकाणै
नी जावू ला
जठैरा मिनख
म्हनै कैद करणो चावै ।"

□

काळ

काळ
विना-बुलायँ
बटाऊ दाईं
घिगाणैं-अचाण चुक्यै ईं
बिरखारो गळो मोस'र
भूख
अभाव
बिमारी
अर दुखड़ै नैं सागै
लैय'र
आंधी-तूफान रै बैग दाईं
आ ऊभ्यो
गावड़िया माय
नागो नाच
करण लाग्यो ।
गावरी बस्ती रा लोग

इण रै आणै रै
सरणाटै स्यू ई
सैम-गैम होग्या,
घूजण नै लागग्या
हात पग सूज ग्या
काळ रै आणै रै
पेल्या ई
याद आवता ई
उवारा कण्ठ सूक ग्या
काळ अर उणरै
सागडदिया स्यू
लडनै री हिम्मत
अब बामेनी रैयी।
भूख स्यू बिलखता
टावर
फाट्योडा घावा पेर्‌यां
घरवाळो
तिस्या डिडावता
डागर,
वाणियै रै
ब्याज मे वढोतरी,
खेतडला री सुनेंड,
वाही ज पी डबल्यू डी रीसडक
रैवैन्यू रा जोडा
अर पचायत री मेंड वन्दी

मरता-पचता भी
प्रतिशत रै नाव माथै
लू ट-खसोट
कारज वन्दी री धमकी ।
सायता रै नाव माथै,
सुबिजता री वात माथै
बचैडै भुगताण माय
अे समरथ लोग
"ऊपर स्यू हुकमनी आयो"
कैय'र
चुप राख दैसी
इण कल्पना स्यू
बारा जाडा जुपग्या ।
अेक दिन सिझ्या
गावरी गुवाड माय
सिरकार स्यू
ढोल वाज्यो
"काळ पडग्यो/दिनुगै स्यू
गाव रै डैलाणियै/जोहडै
माथै काम लागणो है ।"
अर
काळ रै
इतिहास माय
अेक पानों
ओजू जुडग्यो
□

अेक लाम्बी कविता

ढीगारलै गाव माय
वोदियै कूवै रो टाडो,
सात्यू सिङ्या री पो'र
उमो कोटवाळ
हेलोकर्‌यो,
कालै सूरज उगालो री वैळा
गाव री पचायत माय
सगला भुरया
बैठनै बिचार करैला,
क माणकिये सासी
री भाणजी
गाव रै जोहडै माथै
जाय 'र जोहडै रै
पाणी नै भिसैळा दियो
काअी कर्‌यो जावै,
— — —

पचायत री बैठक माय
फूसजो ठाकर
जालू चौधरी
मोवन माराज
जैसो दर्जी
केसरो माळी
शिवो लुवार
अर
रामूडो चमार
भेळा हुया
पचायत री बैठक
सरु हुयी
गाव रा घणकरा
लोग लुगाई बैठया हा
चुपचाप
न्याव री वात
सुणनै रै वास्तै
ठाकर सा बोल्या
"गाव माय अबै
सुगलोवाडो बढतो जायरियो है,
कारु कमीणा
आप री मरजादा
छोड 'र
माथ हगणनै त्यार हुयरिया है,
की जावतो होवणो चाहीजै

नी जरणा की नुकसाण होवैलो"
मोवन माराज हुकारो दियो।
जालू चौधरी आपरी बात
ढेरियो कातता-कातता
कैयो क आजादी सगळी
आरै माय होज बडगी
जको आपरी
ठौड पर रैय परा'र नी जोवै,
जैसो दर्जी बोल्यो —
"माणकियै सासी नै
डड मिलणो चाहीजै
चायै गाव स्यू काढो,
चायै जुरमानो करो,
चायै वेगार देवो,
नी जणा
धम भिस्ट होवतो रैवैलो
भिसटवाडो इया ही वढतो जावैलो"
शिवो लुहार हा भरी।
केसरो माळी
खडो हो परो'र बोल्यो—
"ठेठ स्यू म्हारा वडका
जोहडै री रुखाळी
राखता आया है,
मैं पण समभण लाग्या पछै
ओ काम करतो आयो हूँ,

पण ठा नो
माणकियै सासी रै
परिवार री आ हिम्मत किया पटी
मैं तो कैवूं क
इणनै गाव स्यू
सिर मु डाय'र काढयो जावै ।
चिलम पीवतो रामूडो चमार
बोल्यो—
"वोड़ी वरकी जात है
इण सागै
की नरमी वरती जावै
बापडा जुगा स्यू वस्ती माय
रैवता आया है,
सात्यू जाता नै रैवणरो
हक है ।"
रामूडै री इण वात माथै
पच-पचाण री
त्योरया चढगी
चौधरी खखार र की ऊचो हो बैठ्यो
ठाकर सा होक्कै न खैच मुह ऊचो करयो
मोवन माराज आपरा हात मसळणलाग्या
माणकियो नू' स्यू जमी कुचरै हो
रात घणी चली गयी
पण नतीजो पचायत
निकाळ नी रैयी ही

पच प्रधान रो
हुकम हुयो
माणकियै रै परिवार नै
सुणाई रो मोको
दियो ज्यावै है।
माणकियो सासी
हाथ जोड'र खडो होयो
पचायत माय
काना फुसी सरु हुयगी,
इत्ते नै
माणकियै सासी री घरवाली
पूनकी सासण
उब्यी हुयी अर
पचायत स्यू
बोलणै री इजाजत मागी
पचायत स्यू हुकम होयो
बा बोलण लागी
"जद स्यू मैं
इण गाव माय
ब्याहीज'र आयी हूँ
थे पचायत रा रुखाळा
धम रा हिमायती
म्हारी गुवाडी माय
खाट माथै आय'र
सारी-सारी राता

म्हारी छाती नै मसळता
डील नै मरोडता
अर म्हारै होठा नै
चाटता रिया हो
इण स्यू थारो धम,
गाव री मरजादा नी टूटी,
अर आज
"ई परायो टाबर स्यू
भोळपण माय
जोहड़ री पाळ माथै
जाणै स्यू पाणी रै
हात लागता ई
थारै गावरो धम भिस्ट होयग्यो
म्हनै आ बात समझायी जावै
कै कुण सो कायदो अर धम रो
आण है, जिण माय
म्हारै शरीर'र हाथ मु'डो
लगाणै रो सै'नै हक है
अर म्हारै टाबरा रै
पाणी रै हाथ लागता ई
धम भिस्ट हो जावै।"
पूनकी सासण री बात
सुण'र पचायत माय
सुनैडआयग्यी
जाणै चिडघा माय

भाठी पड ग्यो हुवै ।
न्याव री ताकडी टूटगी
घम री नेठ्यो छूटग्यो
कर्म री लडचा उळभगी
अर पचायत विना
सळटाव अर नतीजै
उठ'र बहीर हुयगी ।



आज रो रावण

आज रो रावण विराजै है
आपरै ठाडै मजबूत गढ माय
राम आज भी घर काढचोडा सा
भीड भडाकै रै नन माय
भटकीजै है ।
सीता डरचोडी सो, निस् फिक्र
नीं हुयी ओजू ताई
आज रा लिछमण रुठचोडा है
भाई राम स्यू ।
भारत री भोळी जनता
हजारा वरसा स्यू बाळ रैयी है
अेक रावण नै
गाव अर सै'र माय
नित नु वा जलम लेवै
रावण अर उवै रा भाई

ओजू ई देस माय
डराओ, भगाओ जावै है
सीतावा अर लतावा।
आज रो राम निबळो
रावण अर उणरा भाई
होग्या है अणगिणत रा
समझ रिया है
राज आपरो।
सतजुगी रावण रै
बीस भुजावा ही
पण, आज रै रावण कनै
सैंकडू हात है,
कद ताणो चालसो ओ
राम-रावण रो जुध,
कदै फिरैली सीतावा
ह्वयर आजाद,
कठै है लिछमण सरीखा भायी
अर्, हडमान सरीखा सेवक।



चौथ रो चाँद

उण बिरती नै प्रणाम !
जिण स्यू
आज भी
चाद ताणी
पूगता थका
लुगाया
चोथ रै
चाद नै
ओजू ई
अरग देवै
पूजै
अर, आसीस लेवै ।

□

पोसाळ

सिक्सा रो
बा दुकान
जठै मा'रजा
टैम रो मोल
पईसा स्यू करै
चैला जठै
आपरै टैमनै
भणाई नी करणै री
ताकडी स्यू
तोलण नै रीजै।



भावा रो बिस्वास भजाणौ स्यू

जूणी रै माथै मे धूड गिरै
बखता री बाता मे सास जुडै
सगळै दिन बै चिलमा पीवै
कुण जाणै किण री साख घुडै
राता नै लाता वाणी पडै
सूरज री चढती उगळी स्यू
कुण जाणै किण रो काम सरै
भावा रो बिस्वास भजाणै स्यू
खोदीजै चिन्तन री मो 'रा
ओकळ री धरती धोरा स्यू
बोलीजै भरम सजोरा
सिरजण चुक्योडा धोरा स्यू ।

□

मागतोडो

भीखै बाणियै री
गुवाडी
सिञ्झ्यारी वेळा
चोखले चमार
रो छोरो
धूजतो-धूजतो
माथो नीचो करयां
आय उब्यो।
भीखै नै
नैडास रो बोध
करावतो बोल्यो—
"ताऊजी
माऊ
दो कीला
दाणा मगाया है

पईसा
परस्यू ताई
बापू की ठीक
होवता ई
मजूरी ल्यार
पैलपोत थानै
देस्या,
घरा दोय दिना स्यू
चूल्है हाडी
नी चढी है,
बापू री आसग कोनी
मा हीडा-चाकरी करै,
हू घनै सियाग
रै अठै
मजूरी गियो
पण
बो पै' ला रा पईसा मागै हो
बीड लिया।"
छोरै री आख्या स्यू
आसूडा ढळग्या
भीखो गरज्यो
"म्हनै ठा नी
थारो बाप जीवै है क मरै
पै 'ला रा रुपिया रो ब्याज
५ रु सैकडा स्यू

ओज्यूं ई बाकी पड्यो है,
१०० रुपिया रै बदळै
थारी च्यार मी 'ना री मजूरी स्यू
म्हारा रुपिया नीं उतरचा है,
छोरो घणो गिडगिडायो
रोयो
हात जोडचा
पण
भोखै रो काळजो
नी पसीज्यो ।

□

रुखाळा

मेह अन्धारी रात
कुतिया भूकै हा
चोर चोरी कर 'र
भाजरिया हा
कई-अेक
सिपाई भी उवा रै
लारै भाजरिया हा
कुतिया जोर जोर स्यूं
भूकण लाग्या
सिपाया माय स्यू
अेक बोल्यो—
"रै कुतिया
चुप रैवो
बिरादरी नै भी नीं जाणो"
कुतिया सरमीज 'र
चुप हुयग्या।

□

डर

समाज री गळैडी
जूनी परम्परावा नै
तोडननै
मिनख
इ या डरपीजै
जिया कोई
फूट्योडी
हाडी स्यू
बण्योडै माथै
अर
फाट्योडै घावा स्यू
ढकैडे
बिदरगी
अड् वै स्यू
भरमीजै
डरपीजै
काळा कागला

□

सभ्यता

कल्बा, सभा, सोसाइटी
अर सभ्यता रो
तकादो
करणियो मिनख
प्रागैतिहासिक
टैम री
सभ्यता स्यू
बराबरी अर ईसको करै—
नागो रैवणो
ओपन सैक्स,
हिंसा स्यू हैत
अर
लूठा कसूर
कर परा' र

आपरी पराचीन
सभ्यता माय
चावै है
घालणी साख ।



बुढापो

टाबर पणैं स्यूं
सीधो ई
जुवानी रैं उपरा कर
उलाघ'र आयग्यो बुढापो
पण
इण उतावळ नैं देखता
कोई इचरज
नी है
क्यूं 'क जुवानी रा सुपना
टाबर थका
दिखीजण नै लाग ज्यावै,
इण खातर तो
जुवानी री समझ
लोगा नै
बुढापै ताणी की नीं आवैं ।

बुढापै री बदनामी भी
अब
टावर थका स्यू लैय 'र
अधेड उमरताणी
होवण लागगी है ।
धोळा बाळ, कम सूजणो, कम सुणनो
अर बोखो होवणो
अै सगळा लखण
पाच बरस रै टावर स्यू
लैय'र बुढाप रै असली
टैमताणी बदै भी
दिखीजणा सरु होवण
लाग ज्यावै है,
आज रो बुढापो
सूधै अर स्याणै पणै
रो प्रमाण नी रियो है ।



मिनख

मिनख जकी उतावळ स्यू
बढरिया है,
बी स्यू ई घणी उन्तावळ स्यू
मिनख पणो निवड रियो है,
लोग आपरै डील नै
जीवतै मास रै लौथडै दाई
मन मारचोडा सा
लिया फिरै
अर,
मन ई मन ओ विचार करै
क'मन अर डील रो ओ
सम्बन्ध क्यू बण्यो है ।
वै जी रिया है,
इण सातर कै
मर नी रिया है ।

सगळा ई आपरी
भीड स्यूं, डरपोडा सा
डैर फर हुयोडा ना
अेक-दूजै नै
ओनरी निजर स्यूं
देखता थका
जा रिया है, अर
मन ई मन माय
सोच रिया है क
सगळा ई चोर है
अर कोजी चीज
चोर'र लैय जाय रिया है
जको नै लैय जाणो
बेकूटो
डुन है।

□

मानीजता

पै'ला होवता मानीजता
वै लोग
जका कनै
होवतो मोकळो धन
राखता रुतबो घराणै रो
का साख होवती, धर्म अर ईमानरी
जिण स्यूं वै
गाव, समाज अर कुटम्ब माथै
करता पचायत अर न्याव।
आज रै नुवै सन्दर्भ माय
बदळाव राखतै टैम माय
मानीजता री परिभाषा
बदळीजगी—
अबार रै मिनख नै
मानीजतो बणनै रै खातर

चाईजै
पच, सरपच
अर का कोओ लू ठी
पार्टी री
मैम्बर सिप
का-फैर करतो होवै
दसखत कोओ
रब्बड री मो'र माथै ।
का-मानीजतो वो है,
जकै-लारै होवै
भीड घणी स्यू घणी
का-कोओ करतो हुवै
इस्यो काम धन्धो
जिण स्यू पईसा
ईंया वणै जिया कोओ
आभै माय तारा ।
का-राखतो होवै मोकळा
लट्ठ भारती अर
गुण्डा री टोळी
वो हीज ही है
आज रो मानीजतो मिनख ।

□

बौपारी

कैंवतो सुणिजै
अेक बौपारी दुजै नै
'राज रा नित नु वा
अडगा स्यू
सगळो बौपार रुळग्यो''
पण
कोअी भी बौपारी
आपरो दिवाळियो निकाळ
रसोइयै रो काम करतो
का-कठै ई हळ वावतो
अथवा कठै ई चपडासगिरी करतो
निजर नी आव ।
दिनो-दिन अै
बौपारी वाजणिया लोग
घणा-घणा पईसा वाळा

होवता दोसै है,
पण
आरै अठ रा हाळी-मुनीम
अर दूजा मजूरो कोणिया लोग
दिन-दूणा गरीब होवता
जाय थिरा है ।
वौपारी दुकान माय
वात करै खुमर-पुसर माय
राजरै टैक्सा अर उपरला
खरचा स्यू तो अब
जीणो ओखो हुयग्यो है
कारज बन्द करणो पडसी
पण,
फैरु भी
गाव अर सैरा माय
नित नुवी
हेल्यां-कोठ्या
अर बगला
बणता दिसै है।
व्याव अर जलम दिन रा
उछाव आं रै
विया ई मनाईजै
जिया रजवाडा अर
नवाबा रा ठाठ,
काओ ठा राजरा

समाजवादी घोडा
आनै किया नी
नावड रिया है।
बौपारी रै लैवल स्यू
मुलक माय घणा लोग
तस्करी चोर बजारी
जमाखोरी अर दूजा दूजा
बै धन्धा कर रिया है
जका
समाज, धर्म, जाति
अर मुलक री
मान्यता स्यू
घणा-घणा अळगा है।
केओ-आंनै समाज शोषक कैवै
तो केओ धवळा हातो
केओ-आनै मुलक रा दुस्मी समझै
पण
सगळा आरै सामन
आवता ई अपनै आपनै
अेकदम गरीब, अर अपाहिज समझै।
भूखा नागा लोग
अज्ञान रै कारण
आरै आगै हात जोड-जोड
अपनै आपनै भागी समझै,
तो केओ समाजवादी,

अर क्रांतिकारी कैवावणिया लोग
आरै
अैस, आराम नै देख-देख
हात मसळै अर
क्रांति आवणैं रै अैलान रै सागै
चाल पडै घरां कानी
अठै सूकी-पाकी
रोट्यां सूं बाथरडो
करणनै लाग ज्यावै।



किरसाण

फाटचोडा गाबा पैरचा
ओ दिन-रात
माटी मे सिर दिया
मरतो-पचतो रैवै,
इण रो कमायो स्यू
समाज रो सात्यू
जात्या पैट भरै,
जीवै
पण,
ओ खुद !
भूखो-नागो रैवै
सियाळ रो डाफर
उन्हाळै री ताप
अर चौमासै री
बिरखा माय

चेक सास स्यूं
कारज करै ।
इण रै कमतर रै
फळ स्यूं
बडा लोग
और घणा
वडा वणग्या
इण रै काम स्यूं
घरनो सोनो ऊगळै
आभो इमरत वरसावै
वायरो मन हरखावै
पण ओ
विया ई
भूखो, तिरस्यो
दिन-रात
आपरै
काम माथै
लाग्यो रेवै ।

◆

चिमनी रो धुवो

मिल री
चिमनी रो
धुवो,
मिल माय
काम करता
मजूरा रै
बळतै खून
अर
गळती हाड्या री
ओळखाण
करावै।



साप

समाज रा काळ वेलिया
सापा नै
पाळै,
रुसाळै
अर
वद राखै
आपरै
पिटारा माय
टैम-टैम माथै
वानै, नचा-नचा
समाज री
भीड स्यू
आपरो सुवारथ
पूरो करता
रैवै ।

◆

पाठ

क—मानै
कबूतर
शांति रो प्रतीक
ख—मानै
खरगोश री रफ्तार
बगतो मुलक
ग—मानै
गगन भेदी उवाज स्यूं
बोलता मिनख
"मैनत स्यूं मुलक बडो हुवै"
पाठ पढावतो मास्टर
मन ई मन माय गोखै
भणिजणिया टाबर
बद ताई
याद करैला
यो पाठ ।



जहर

भूख
गरीबी अर
कमठाण रो जहर
पीवतो,
आज रो मजदूर
अर किरसाण ।
देस रा
देवता हरखोजै
कै अबै
ओ जहर
दूजां नै
नी पीवणो
पडै ।

ऊमीजतो सैः'र

मिनखा रो
भीड स्यूं
ऊमीजतो सै'र
गाव कानी
लफासा लैवे
क्दास,
उमीज मिट जावै,
पण
बो आ बात
बिसरै कै
गाव रा लोग
म्हारै कानी
आख मीच र
आय रिया है ।



हाण्डी

हाण्डो रै पीन्दै
माय चिप्योडो
साग
लफास लाग्योडै
मोटयार रै
पेट री होड करै,
अर
दोनू ई
आप-आप रै
अस्तित्व नै
सावचेत
राखणै खातर
जुध करै
भरेडी हाण्डी
अर पेट स्यू ।



मइला बरस

मइला वरस
माय
व्याईज आयोड़ो
अणपढ बीनणी
माग करै
आपरै
मोटयार स्यू
उंची अंडी
री सैण्डल,
टरीन री साडी
अर सोनै रै
बगड री।
परेंज करे
रोटी पोवणै
कपडा धोवणै
पाणी ल्यावणै स्यू,

अर
वखाण करै—
"मइला वरस री
लुगाई-मोटयार
सैंग वरोवर है
अवै म्हानै भी
वोलण री दरकार है।



छूट

छूट है,
बोलण री,
कम तोलण री
कम मापण री
जग ठगण री
पण,
छूट नी है
धाप'र खावण री
कमावण री
भर ज्यावण री
मन री बात
बतावण री।



भूरजी पितर रो नाडो

भूरजी पितर रो नाडो
आखा लेवै
नाथी बाई
आगै पाछै
नैडै-आंतरै
रो भिजोक मिटावै
भूरजी पितर रो नाडो
पेमतो रो बोरलो,
रुघलै रो
बाछडियो
चैनको रो पाजेब
बतावै
परचो देवै
भूरजी पितर रो नाडो
सुत्या रा भाग जगावै
गै'लारो वात बतावै
चोरा रो साख घलावै

ठगां रो जात बताव
भूरजो पितर रो नाडो .
नारेळ बधारचो
घूप खेयो
आखा दिया'र
हाथ जोडया
बोली हेमो जाटकी—
"म्हाराज बखाणो
टोडियै रो (छोरै रो नाव)
पेट दुखै, हिवडो हिलोरा खावै
काअी करु ?"
पितरजो माथो भुवायो
जबडक दि'हो—
"जा-जा मीगणा कर देसी ।"



शिक्षा शास्त्री

अेयर कण्डीसन रो रैवासो
फस्ट किलास माय जात्रा करणियो
देस रो भणाई विसेसज्ञ
अमरिका इ गलैण्ड अर
बीजा पिछमी मुलका रो
चक्कर लगाय
मोटै दफ्तर माय
बिराजै, अर विचार करै
मुलक री डूबती भणाई—
रै मोल माथै ।

आपरै टाबरा नै
पब्लिक इस्कूल माय
भणाई खातर भेजै
खुद कैबरा माय जावै
अर सगळै टैम
चिंतन रो दिखावो करै
गरीबा री भणाई माथै ।

भणाई अर छात्र अनुसासन रै
वास्तै
नित नुवी बैठका अर सैमीनार
बुलाई जावै
मुलक रै भणाई री व्यवस्था
रो मिलाण करै
सिक्षा सिद्धात
री जूनी पोथ्यां स्यू ।

पराईमरी स्यू कॉलेज ताईं
सगळै आ ही कैवै
पढेसरचा न पढणो चाहीज
बानै ओ ध्यान नी देणो
चाहीजे कै
कठै कायो हुय रैयो है
मुलक री भणाई स्यू
आपरै चिन्तन नै जोडै
अर सिक्षा नीति री
असफलता माथै दुख
परगट करै ।



नौकरी

पारस रै भाडै ढाई
भगवान रै दरसण दाँई
मोत्या मुघो है
नौकरी,
काम करतो मिनख
जठै
काम करणै री
खिमता
गमाय रियो है,
वठै
बेकारी स्यू टुटेडो
मिनख
आपरी खिमता नै
कुण्ठाल कर रियो है
अर
खिमता रो माप कर रिया है
अफसर लोग
डिग्री अर पईसा रै

थर्मामीटर स्यू
बेकारी अर भणाई
वढ रैयो है
नौकरी अर साच
घट री है,
मोत्या मुंघो है नौकरी ।



मुलक रा ३० बरस

आजादी रा
३० बरस
इया पूरा हुयग्या
जिया को ई टावर
जनम लैय'र
टावर स्यू जुवान होयग्यो है।

आजादी रो ओ रूप
दिसणै मे घणो
रूपाळो, हिमाळो अर
सूरमो दिस्सै
पण
हाथ री नब्ज दगती
इया लागै
जाणे ऊपरा स्यू
तेज-तर्रार दिसतो
ओ डील
मांय स्यू

थोथो-मा दो
अर घणी सारी
बिमारघा स्यू
दब्योडो है।

३० बरस रो इण
मुद्दत माय
इणरै कितांई रोग
लाग्या अर छुट्या
इण रो बिमारघा न
घरआळा तो जाणै हैं
पाडोस्या ताण्या नै निग है
भूख मरो, बेकारो, तस्करो
जमाखोरो अर रिस्वत खोरो
जिसो केयो बिमारघा हैं
जिण रै कारण ओ
दिसणै माय सावळ
लागता थका भो
ओ मन हो मन माय
दब्योडो है,
मादो होय रियो है।
पाव जुध रो जीत
बगला देस रो निरमाण
उद्योग-धधै रो बिकास
अर के ओ साचा नेतावा रो

सेवा रो इन्जेक्सन
खावणै स्यूं दिखरियो
औ डोल,
ऊपर स्यूं फूटरो, फर्रो
अर जुवान।
३० वरस रै इण जुवान नै
ओजूं ई आपां चावां तो
स्टेप्टो–माईसन रै इन्जेक्सन
री अेक पूरी फाईल देय'र
सावळ कर सकां हां
पण
अठै ताणी इण
मोटयार नै आपां
देस अर कारज
रै मायं चाव री
खुराक टैम-टैम मायं
नी दैवाला
बठै ताणी
इण रो न रोग घटैलो
अर न
निरोग हो सकैलो।



पोमलो लुहार

पोमलै लुहार रो हतोडो
वादुडी री धूकणी स्यूं
लो (लोहा) अर
बीजा पदारथ
बळ अर गळै
चावै जिया कोरीजै
पण
पोमलै रो माग तोडो
बो'रो
टोकू बाणियो
ब्याज-पड ब्याज रो
तकादो करै
भोगळियो रवणै खातर
उण माथै
जोर लगावै ।
वादुडी रै ओढघोडा
घावा माय
झाकै,

वींरै हिड़दै रा
किरचा-किरचा
कर परा'र
उण रै सागै
बलातकार कर
अर जुलमा री
साख भरै,
पण
पोमलै रै
हतोड़ै अर
बादुड़ो री घूंकणी स्यूं
टोकू बणियै री
जोर-जबर डील
मीं गळै।

□

दिवाळी

रिदियो चमार
दो रुपिया रोज
मजूरी पर
चेंजे जाव

बाजरी रो रोटी
कान्दा रो साग
खायर रिदियो,
बीरो लुगाओ, अर छोरो
दिना नै
धक्का देवै।

दिवाळी रै पाच
दिना पै'ली
बुधवार नै
रिदियै रो छोरो

डिप्तिरिया रोग स्यू
जकडोजग्यो ।
डागधर रो
जवाब
छोरै रो
घोरां कान्नी मू – ..
पांचवो दिन
सं दिवाळी
सेठजी
मजूरा नै
मजूरी चुकावै,
तू काम थोडो करयो
दो रुपिया कम देस्यू
तू परस्यू देरी स्यू आयो
रुपियो कम दस्यू ।
तू रिदिया
पांच दिना स्यू
जावक कोनी आयो
हैलो र काम मांय
भिजोक पडयो ।
रिदियो
सुबक्यो
म्हारो छोरो
उतरग्यो
पांच दिन हूदग्या

हाडी चढी नै
सेठजो दड़क्यो
म्हांनै ठा नी
काम माय भिजोक
क्यारा पईसा
क्यारी मजूरी
कोयी हिसाब
बाकी नी
और कठैई
मजूरी लाग।
रिदियो
घरां
झूपड़ै आगै
बैठयो
सै र माय
छूटता पटाखा
जगमगाता
दिवला स्यू
अरथ करै
आपरी भूख अर
छोरै रो
मौत री
सुनैड स्यू।

□

बैः लोग

सूरज रै
तावडै स्यू
काळा पडता
बै लोग
मुळकतो
मैणत स्यू
हैत घालतै
किरसाण रै
पसीनै री
बूंद स्यू
होड करै
रात थामणै
री गोळघां
दिन भजाणै री

बोलता रो
भोग करै
पण
फेरु ई
ऊगते सूरज
री किरणा री
रिफलक्सन
मैणत री
बूंद माथै
होव'र
वा लोगा नै
चम्ब रै
खुडकै
ज्यूं डरावै ।

□

डिग्री

डिग्री रै
बोझ स्यू
लदड पदड
जुवान,
अनुभव रै
निवडतै
भण्डार कान्नी
देख-देख'र
सोच करै
अर पिस्चतावै
कदास
गुणिजणां री बाठ
पढणै स्यू
पै'ला ई
सीखतो।

उकळती ओकळ

उकळती
ओकळ ज्यू
म्हारो काळजो
ओर घणो
उकळिजै
जद
मैं देखू
बाँ लोगा न
जका
मुलक अर
समाज नै
चुस्सै इया
जियाँ कोयो
चिचड चुस्सै
भोळी-ढाळी
गाय नै।

रमतिया

भावना रा रमतियां
स्यूं खेलतो
मिनख
आपरी जिनगाणी रैं
घरा नैं बचावैं
ऊपर-नीचैं
आगैं पीछैं
पण,
वैं पाछा
पड-पड ज्यावैं
अर
ओळूं दिरावैं
सोनैं रैं बाळपण री
म्हे ई खैल्या
म्हे ई ढोया।

नान्हो कवितावा

नेतो

किरसाण रो दुहाओ
अर मजूरा रो आण
रो वखाण कर'र
पेट पालतो अेक
मोटयार।

अर्थ शास्त्री

भूख स्यू वायरडो करता
थका भी दूजानै
पईसा बणावण रो कळा
सोग्वावण वाळो आदमी।

पूजारी

घणा घणा जुलम करता थका
दूजा नै करम अर भगवान
रो डर दिखावणियो
दलाल।

राजनीति

वा बिमारी जकी स्यू
दूर रैवणियै नै ना समझ
अर माय रैवणियै नै
बिमार समझै

□

जातिवाद

सिखवाद
जाटवाद
मियावाद
अर
ब्राह्मणवाद
जातिवाद रै
जहर रो
अेक ही मुवाद।



बंदी

ळा वन्दी
ा वन्दी
न्वा वदी
तकाळ
हल्का वदी
किल्ला वदी
भर फेरू
नसवन्दी ।



ओकळ

आ ओकळ
पीळो मटमैलो
उकळती, बळती
जेठ, बैसाख रै
म्होना माँय,
दिठाव करावै
मिनख नै
मृग तृष्णा रो
आ धरती ।
भाव रै
भतुलिया नै
आ ओकळ
भरमावै रिजावै
तिस्सै
तृप्ति रो सागर
दिठावै
आ धरती ।

भतूलिया

भाव रा
भतूळिया
भपोड दाई
उगै अर
मिट ज्यावै,
फेर ई
मिनख
मन रै
घोडै री
लगाम
आपरै
हात माय
राखण नै
रीजै।

चाय रो कप

चाय पट्टी रै
होटल माय
रफ्तार स्यू
बडतो
सुसंस्कृत गिराक,
एक कप चाय
कय'र
आपरो दर्शन
कप री चाय माय
घोळै,
टेबल रै दूजै कानी
बैठ्यो
नूवो नेता
चाय रै कप माय
ल्याणो चावै तूफान

पण
होटल मालिक
जाणै
क आवता जावता
गिराक
चाय रै कप नै
बणाणो चावै
पानीपत रो मैदान,
दूजै दिन
कप की
ओर छोटा होग्या।



बैम

आदी रात नै
मोमजी सेठ री
हेली माथै
कोचरी करळाटो मारयो,
सेठजी री
नींद उडगी
मन ई मन
भरमिज्या
कदा'स
लिछमीजी
कोचरी माथै
चड'र
बीं'र नी
हो ज्यावै ।

लफासा लेंवतो पेट

इनक्लाब जिंदाबाद रा
नारा लगाय
पेट भरणै री
म्हारी आदत
घणी पुराणी हुय'र
बिगडगी है,
अब मैं
चोराये, तीकूटे अर
गळी कूचला मांय
घेराव सत्याग्रह
अर हड़ताल वेच'र
पेट भरूं ।
फेरूं भी
लफासा लेंवतो
म्हारो पेट

कुण जाणै

मौमजी र नाव आगै
घ ना सेठ लागै
पईसा री मार स्यू
पईसा बार सागै,
लाखां ई आव
लाखा ई लाग
घोतो री मार स्यू
शेर आगै भाग
जनता स्यू नेता
नेता स्यू जनता
लेवता-देवता
आगै ई आग
कुण आयो कुण गयो
सूत्या ई जाग
टैक्सा मे आपाधापी
लेय देय'र आधा माफी
कुण जाणै कठ पोव
कुण घोवै साफो।

लीलटांसी आंख्यां

म्हारी आख्यां मांय
लीलटांस रो रंग
पण, फैरूं ई
मनै दिठावै
अंधारो। अंधारो
हळ वावतै मोट्यार री
काया देख'र
हरित क्रांति रै रोळा
मांय मनै
म्हारी रंगीन निजरां —
स्यूं दिवळ
लागती दिस्सै।
दूध मांय पाणी
अर पाणी मांय दूध
मिलता • मिलता

गिलगिलो

जेठ असाढ़ रो महीणो
भैरो चौधरी
डावलै मत री
ऊंचली टेकड़ी माथै
जमीन रै गिलगिलो
करै,
जमीन हड़हड़ाट करती
हँसे,
भैरे चौधरी रै
इण साल
गरड़ाट करतो जमानो।



सुवाल

तीजूड़ो मेहतराणी
ओ जू ई
सुवाल करै
पैठाणो रै सुहाग स्यू
कै, कद ताणी
बि-धोजतो रैय स्यू
थार औ लम्बा हाथा
अर,
घोळा-घोळा गाबा रै
डर स्यू ।



पुजारी

शताब्द्यां स्यू
भूखी रेंवती
गरीब जमात नैं
बोजू ई मिन्दर रो
पुजारी
सीख देव, व्रत करणं री
सठाण्या नैं परमोद देव
– 'थे दान करो''
ठा नी भगवान रो
पुजारी,
ऐक ई किलास मांय
भणोजणीया भगता नैं
न्यारा न्यारा पाठ
क्यू पढ़ावै ?



बदळाव

जंळ स्यू निकळतै
पतगं स्यू
घमाको हुयो
अर, हिन्दुस्तान री
गिदी मांय बेठ्या भगवान
बिदक'र
मैहला स्यू
बारै जाय पड्या।

